Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

# संस्कृत पत्र-पत्रिका का महत्त्व

डॉ बिभाष चन्द्र
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत),
केंद्रीय विद्यालय क्रम संख्या-2,गया बिहार, भारत।

**शोध आलेख सार** :- संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्व अवर्णनीय है। किसी भी भाषा की पत्र-पत्रिका नवीन विचारों के सूत्रपात में, राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में, भाषा के साहित्य विकास में, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में, सहायक होती है। संस्कृत की दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, अर्धवार्षिक तथा वार्षिक पत्र -पत्रिका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मानव की ज्ञान-पिपासा को शान्त करती है। इन पत्र- पत्रिकाओं में साहित्य के विविध आयाम यथा - वार्ता, संस्कृत गीत, नाटक, गद्यात्मक लेख, समालोचना, व्यंग्य, महाकाव्य, खंडकाव्य, कथा, चम्पू, लघुकथा, प्रहेलिका आदि स्थायी स्तंभ के रूप में सुनियोजित रहते है। यद्यपि संस्कृत में दैनिक या साप्ताहिक पत्रिका नगण्य है, फिर भी संस्कृत पत्र-पत्रिका जन-जागरण में सर्वोपरि है।

**मुख्य शब्द** :- साहित्य , पत्र-पत्रिका , संपादक, प्रकाशन, दार्शनिक, धार्मिक, अभिव्यक्ति, रचना, समालोचना ।

---

संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का विभिन्न दृष्टियों से महत्त्व है। किसी भी भाषा की पत्रकारिता नवीन विचारों के सूत्रपात में पूर्ण सहयोग देती है। इनसे अनेक राष्ट्रीय भावनाओं का विकास होता है।

संस्कृत की साप्ताहिक तथा दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में देश और समाज के प्रति सम्मान की भावना मिलती है। उनका जन-जीवन से सम्बन्धित होने के कारण वे नये पथ को प्रदर्शित करने में सफल हुई हैं।

आज का संस्कृत साहित्य विभिन्न दिशाओं में प्रगति की ओर उन्मुख हो रहा है। पत्र-पत्रिकाओं के क्षेत्र में भी आधुनिक संस्कृत साहित्य की पर्याप्त उन्नति हुई है। किसी भाषा की विविध पत्र-पत्रिकायें जन-जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। वे युग-विशेष की घटनाओं, समस्याओं तथा जनभावनाओं के साथ दैनिक समाचारों को वाणी प्रदान करती हैं।

दूसरी ओर पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्व स्थायी साहित्य के निर्माण में है। संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं ने अर्वाचीन साहित्य के निर्माण और विकास में पर्याप्त सहयोग दिया है तथा कई प्रकार का नया साहित्य इनके द्वारा सामने आया है। व्यंग्यात्मक गद्य का विकास **"विद्योदय:''** नामक संस्कृत पत्रिका से प्रारम्भ हुआ। नये परिवेश में लघु गीत और लघु कहानियाँ तथा उपन्यास भी प्रकाशित हो रहे हैं।

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें संस्कृत साहित्य के संबर्धन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्रदान कर रही हैं। मासिक पत्र -पत्रिकाओं में वाद-विवाद और साहित्य-समालोचना के लिए नियमित स्तम्भ रहते हैं। इनके प्रकाशन से साहित्य के प्रति उत्साह का जागरण हुआ है।

पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा अनेक साहित्यकारों एवं उदीयमान लेखकों को साहित्य-सेवा के लिए महनीय प्रोत्साहन मिला है। संस्कृत लेखकों की प्राय: प्राथमिक रचनाओं का प्रकाशन इन पत्र-पत्रिकाओं में हुआ है।

संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं द्वारा साहित्य में नूतन भावों एवं विचारों का प्रसार हुआ है। अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में गीत, चलचित्रगीत, समालोचना, प्रेमगीत, स्फुट गीत आदि का विकास पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा हुआ।

अनेक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक साहित्यकार एवं अनुभवी आलोचक रहे हैं। वे साहित्य को एक नई दिशा की ओर मोड़ने की क्षमता रखते थे। साहित्य में ऐसे परिवर्तनों तथा सुझावों से एक अच्छा साहित्य सामने आता है। संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक केवल पत्रकार ही नहीं थे, अपितु साहित्य के विभिन्न अंगों की रचना करने में वे समर्थ थे। उनकी रचनाओं का प्रारम्भिक प्रकाशन पत्र-पत्रिकाओं में हुआ है।

अप्पाशास्त्री के अनुसार पत्र-पत्रिकाओं द्वारा साहित्य का अभ्युदय होता है। यही उनका प्रमुख महत्त्व है। यथा –

**"तासां तासां च भाषाणामेकान्तिकाऽभ्युदये विशेषतश्च विलीनप्रायप्रचाराणां पुनः प्रचारोपक्रमे तत्तद्भाषामर्याणि संवादपत्राणि मासिकपत्रिकाश्च भूयसी हेतुतामार्धगच्छन्तीति''[1]।**

संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा भाषा और साहित्य की कितनी की समस्यायें सुलझाई गयी हैं। संस्कृत मृतभाषा है, ऐसा दुष्प्रचार करके इसे सामान्यतया प्रत्येक पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि से दूर किया गया। दैनिक साहित्य और सामयिक साहित्य की सृष्टि पत्र-पत्रिकाओं द्वारा हुई। तात्कालिक प्रभावशाली साहित्य का सर्जन सर्वप्रथम इन्हीं से सम्पन्न हुआ। अमर साहित्य के साथ ही साथ तात्कालिक साहित्य भी पत्र-पत्रिकाओं से पल्लवित हुए है।

किसी भी भाषा की पत्रकारिता का लक्ष्य विविध सामग्री के द्वारा पाठकों को अधिक से अधिक आनन्द प्रदान करना है। यह आनन्द भौतिक धरातल पर प्राप्त होने के साथ-साथ आध्यात्मिक मार्ग का भी पथ प्रदर्शन करती है, यह आनन्द बिल्कुल स्वस्थ, चिरकालिक और अतीन्द्रिय होता है। अतः सोपदेश प्रधान आनन्द ही श्रेयस्कर है। **"रामादिवत् वर्तितव्यं न रावणादिवत्"** का स्वस्थ एवं ग्राह्य विचार पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा सहज ही में सम्पन्न होता हैं, अतः संस्कृत पत्रकारिता प्रमोदैकनिकेतन अर्थात् आनन्द-गृह है। जिस प्रकार आतप-ताप से संतप्त व्यक्ति अपने घर आने पर स्वस्थ एवं शांत वातावरण पूर्ण आनन्द का अनुभव करता है। उसी प्रकार भौतिकता से संत्रस्त व्यक्ति पत्र-पत्रिकाओं को प्राप्त कर उनका सम्यक् अध्ययन कर आत्मतोष प्राप्त करता है।

समाचार पत्रकारिता को छोड़कर साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्व काल और देश सापेक्ष नहीं होता है। सैकड़ों वर्ष पूर्व प्रकाशित पत्रिका का आज भी अनुसन्धान हो रहा है। स्थायी साहित्य एवं तत्कालीन प्रवृत्ति की दृष्टि से उसका अक्षुण्ण महत्त्व रहता है। अतः उसका महत्त्व सतत सवंर्धित होता रहता है। वह पुरानी युवती है। ऊषा की तरह नित्य नवीन है। जीर्ण-शीर्ण होने पर भी उसका रस-प्रवाह कम नहीं होता है।

नये नये भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम पत्र-पत्रिकायें हैं। प्रत्येक पाठक उन भावों का आस्वादन निमग्न होकर करता है। उनमें प्रतिपल नवीनता रहती है। अग्रिम अंक की प्राप्ति की प्रतीक्षा भी उनके महत्त्व संवर्धन का कार्य करती रहती है।

साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में चिरसाहित्य का प्रकाशन सतत होता रहता है। संस्कृत पत्रकारिता साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं से बाहुल्यमयी है। इनमें महाकाव्य, खण्डकाव्य, उपन्यास, कथा, चम्पूकाव्य, एवं नाट्यसाहित्य, लघुगीत लघुकहानियाँ, अनुसन्धान से सम्बद्ध एवं सामान्य निबन्ध तथा पत्रसाहित्य आदि प्रकाशित होते हैं। आधुनिक युग का अधिकाशं साहित्य संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में ही प्रकाशित हुआ है क्योंकि उन ग्रन्थों का स्वतन्त्र प्रकाशन नहीं हुआ है। अतः संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का प्रबन्ध की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। विपुल साहित्य- रत्नाकर में पत्र-पत्रिकाओं की प्रमुख सामग्री रत्न की तरह विखरी पड़ी है। श्रीमान् अप्पा शास्त्री ने वत्सरारम्भ के निवेदनों में प्रायः पत्र-पत्रिकाओं के महत्त्व की चर्चा करते रहते थे। एक श्रेष्ठ पत्र-पत्रिका को प्राप्त कर पाठक उसे

आद्यन्त पढ़ने के लिए आहार-विहार आदि का परित्याग कर देता है। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं के लिए किया गया धन-व्यय निरर्थक नहीं होता है। जिनका सुन्दर-सम्पादन, सुनियोजित विषय-संचयन के साथ होता है। इसमें धन का व्यय बिल्कुल सार्थक संतोषप्रद रहता है।

उपर्युक्त मुख्य तथ्यों से संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की उपयोगिता सहज ही स्पष्ट हो जाती है। आज इस जनजागरण के युग में संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की और अधिक उपयोगिता बढ़ रही है। विभिन्न रुचि वाले मनुष्यों को तदनुकूल सामग्री प्रदान करने के कारण भी उनकी उपादेयता है। मंजुभाषिणी पत्रिका में संस्कृत पत्रिका की परिभाषा करते हुए कहा गया है-

**"पत्रिका हि नाम सुहृदामादरमेकमेव शरणयन्ती नरपतिरिव जनानुरागं विभिन्नरुचिषु सर्वेषु कान्तमात्मीयं पश्यत्सु पत्रिका ग्राहकेष्ववलम्बनम्"[2]।**

इस प्रकार साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का अनेक दृष्टियों से महत्त्व है। यद्यपि समय पर प्रकाशन सभी संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का नहीं हो पाता है तथापि उनका महत्त्व कम नहीं होता। **'यथाकालप्रकाशो संस्कृतभाषामयीनां साम्प्रतिकीनां मासिकपत्रिकाणां दोष:'**[3] होने पर भी पत्र-पत्रिका सम्पादक की बहिश्चरप्राण की तरह होती है। अत: इनका महत्त्व अनेक प्रकार से है। मंजुभाषिणी में पत्रिका का विशेष महत्त्व प्रतिपादित किया गया है, उससे विभिन्न रुचि की तृप्ति होती है। महाकवि कालिदास का नाट्य के प्रति कथन पत्र-पत्रिकाओं के प्रति भी सार्थक है।

**पत्रं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।**

अर्थात् पत्र-पत्रिकाओं से भिन्न भिन्न रुचिवाले मनुष्यों का समाराधन होता है, क्योंकि इनमें विविध प्रकार का वाङ्मय सतत प्रकाशित होता रहता है। पत्रकारिता का महत्त्व अयत्नविहित है। यह एक सर्वश्रेष्ठ जन सेवा है। यथा-

**"पत्रिका नाम नो वणिग्वृत्तिर्याचकत्वं च शासनाधिकारो न धनपिशाचाराधनकल्पो नैव भिक्षावृत्तिर्याचकत्वं पौरोहित्यं वा पत्रकारिता तु वा तावल्लोकसेवायज्ञाङ्गितकर्मोपासनायोगाभ्यासोऽन्यायविरुद्ध युद्धं जननेतृत्वमपि शिक्षकत्वमिव किमपि विचित्रं सत्कर्म'[4]।**

इस विचित्र सत्कर्म की प्रतिष्ठा नव-साहित्य के प्रकाशन से सम्भाव्य है। ऋणर्णव समुपस्थित होने पर भी इसके महत्त्व को ही ध्यान में रखकर सम्पादकों ने इनका प्रकाशन बन्द नहीं किया है। रसिकों को आनन्दित करने वाली संस्कृत पत्रकारिता श्रेयस्करी है।

समाचार प्रधान पत्रकारिता का भी महत्त्व कम नहीं हैं। इसमें भले ही चिरसाहित्य का प्रकाशन अत्यल्प होता है तथापि निर्बल को सबल उदासीन को उत्साही, लघु को गुरु और अज्ञ को विज्ञ बनाने में इनका महत्त्व है। यथा-

**'समाचारपत्राण्येव निर्बलान् सबलयन्ति निरुत्साहानुत्साहयन्ति लघून् गरयन्ति अज्ञांश्च विद्वदयन्ति[5]।**

यद्यपि संस्कृत में समाचार पत्रों का महत्त्व नगण्य है क्योंकि पाठक दैनिक अथवा साप्ताहिक पत्र की अपेक्षा संस्कृत की मासिक पत्र-पत्रिकाओं को ही अधिक उपादेय समझते हैं। यह तथ्य अनेक सम्पादकों को भलीभाँति अवगत रहा है। यथा-

**"ग्राहकै: साप्ताहिकपत्रापेक्षया मासपत्राण्येव भावसम्पदा अर्थगौरवेण आकारसौन्दर्येण भाषामाधुर्येण च साधीयांसि स्वादीयांसि गरीयांसि चेति[6]।**

अत: समाचार प्रधान पत्रों की अपेक्षा संस्कृत में मासिक पत्रिकाओं का अधिक महत्त्व है। प्रादेशिक मैत्री सवंर्धन तथा जनजागरण आदि के वृत्तान्त इन पत्र-पत्रिकाओं में वर्णित होते हैं।

इन पत्र–पत्रिकाओं की उपादेयता उनमें प्रकाशित साहित्य के कारण अधिक है। संस्कृत भाषा में रचना का प्रवाह उसी प्रकार आज भी उपलब्ध होता है जैसा कि आज से हजारों वर्ष पूर्व था। आधुनिक युग में संस्कृत साहित्य की अनेक विकासमयी प्रवृत्तियों का परिचय पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा प्रतीत होता है। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं के चयन से स्पष्टतया यह ज्ञान होता है कि आज का कवि या नाटककार उसी परम्परागत शैली में रचना करने का प्रयास कर रहा है, जिसकी प्रतिष्ठा कालिदास, बाण, भवभूति आदि कवियों ने की थी।

संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं में विभिन्न प्रकार की रचनाओं का प्रकाशन होता रहा है। इन पत्र–पत्रिकाओं में लघु कवितायें, छोटी कहानियाँ तथा उपन्यास आदि प्रकाशित हुये हैं, साथ ही निबन्धों और सम्पादकीय टिप्पणिओं में समकालीन घटनाओं, सामाजिक प्रश्नों, नये परिष्कारों और परिवर्तनों पर भी पर्याप्त प्रकाशन डाला गया है। विभिन्न प्रकार की आधुनिक प्रवृत्तियाँ इनसे पल्लवित हुई हैं। महाकाव्य, कथा, उपन्यास, नाटक, खण्डकाव्य, चम्पू, इतिहास और जीवनी, व्यंग्य और विनोद, भ्रमणवृत्तान्त, स्तुतियाँ, अनुवाद और रूपान्तर, व्याकरण, सूत्र, अन्योक्ति, समस्यापूर्ति, शोध–निबन्ध, समालोचना, बालसाहित्य, टीका, नीति और उपदेश, दार्शनिक और धार्मिक ग्रन्थ, करुणगीत लहरी, प्रहेलिका, कूट–आदि विभिन्न प्रकार की रचनायें संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

अत: संस्कृत पत्रकारिता बहुजनहिताय और बहुजनसुखाय है। किसी भी भाषा की प्रगति के लिए पत्र–पत्रिकायें बहुत उपयोगी हैं। संस्कृत समृद्ध भाषा है तथापि उसके प्रचार और प्रसार के लिए पत्र –पत्रिकायें सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। आज भी जितनी संस्कृत पत्र–पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं, वे इस बात के पुष्कल प्रमाण प्रस्तुत करती हैं कि संस्कृत का पठन–पाठन और लेखन पूर्ववत् विद्यमान है, भले ही कालिदास एवं भवभूति के समान महनीय साहित्य का सृजन नहीं हो रहा है, परन्तु अजस्र प्रवाह आज भी प्रवाहित हो रहा है।

## सन्दर्भ सूची

1. मंजूषा वर्ष 1, अंक 4, पृ. 53.
2. मंजुभाषिणी वर्ष 1, अंक 1.
3. मित्रगोष्ठी वर्ष 3, अंक 8.
4. दिव्यज्योति: वर्ष 1, अंक 12, पृ. 12.
5. सूर्योदय: वर्ष 8, अंक 2–3.
6. मधुरवाणी वर्ष 12, अंक 1.